॥ उँनमश्रीतिकस्लाय ॥ पंवत्रकाया ॥ याय तिसि ॥ कयाधपना ॥ कलग ॥ यितांय
महाकाव ॥ सग्यन ॥ यंग वास ॥ कृगकन ॥ सिम्मुख ॥ मग ॥ पंवसालि ॥ मधवलि
वकासाधन ॥ वयूका ॥ पुका ॥ मूकाज ॥ रावस्वन ॥ मयूरकुक्किवान ॥ हासि ॥
नकिविपूल ॥ मूइवाव ॥ मूववलि ॥ कलसगलय ॥ तिथिलस्व ॥ पंवामृत ॥ पंव ॥
गय ॥ पंवबल ॥ पंवपल्लव ॥ पंवाधि ॥ पंवहदि ॥ पंवहूपका ॥ मूइवाव ॥ थ
तिथापना ॥ वासवेश्व ॥ मधस ॥ पंवत्रका ॥ मूगस ॥ घव ॥ मकुलवाय ॥ हे ॥
चूवाकनमधुकाय ॥ मधस ॥ ए ॥ रक ॥ पूइस ॥ सा ॥ यज ॥ वकिंस ॥

167-
Pavarelisa
vellu

| 334 | I |

मं॰ जल्। यच्चिमस ॥ म॰ पम॥ ऊलस। गी॰ विप्यवऊ ॥ विदिगस॰ घ
टविक्क॰ ग्यऊ ४ ॥ ॥ थनमिमधुलसवीहि॰ ह्यवनडायक ॥ ॥ ग्रादि
ग्यया। वीहि॰ स्वानवा॰ ग्रदृयति॰ मावासा॰ स्वान॰ ऊऊम॰ यगाय॰ ग्राक्॰ ॥ धातु
सिऊम॰ वलिस्तुकि॰ क्षीवऊा ॥ १ ॥ सामया। वीहि॰ ग्रायूहाम्॰ ग्रदृयति॰ सीव॰
स्वान॰ ऊऊम॰ यगाय॰ ग्रायू॰। धातु सीव। वलिस्तुकि॰ यधि ॥ २ ॥ मूगमया।
वीहि॰ मूका॰ ग्रदृयति॰ थसा॰ स्वान॰ ऊऊम॰ यगाय॰ ग्राक्॰। धातु यूथ। व
लिस्तुकि॰ मास॰ वा॰ ऊा॰ वाक्॰ ॥ २ ॥ वूथया। वीहि॰ नयूका॰ ग्रदृयति॰ लूं॰

स्वान॰ ऊऊम॰ यगाय॰ नयू॰। धातु लूं॰ स्तुकि॰ घृत॰ मूग॥ ३ ॥ दृढस्यकिया।
वीहि॰ गच्छा॰ ग्रदृयति। लू॰ स्वान॰ ऊऊम॰ यगाय॰ नयू॰ धातु लू। स्तुकि॰
क्षीवदृक्॰ ॥ ४ ॥ शुक्लया। वीहि॰ कऊगुऊ॰ ग्रदृयति॰ सीव॰ स्वान॰ ऊऊम॰ य
गाय॰ गायू। धातु डारा। स्तुकि॰ पूयकक्षीवम्मा ॥ ६ ॥ गनिस्थनया। वीहि॰
मास॰ ग्रदृयति॰ कऊगुऊिसा॰ स्वान॰ ऊऊम॰ यगाय॰ वाक्॰। धातु ग्रा। स्तुकि॰
मास॰ ऊिसवम्मा ॥ ७ ॥ वाहुया। वीहि॰ स्वात॰ ग्रदृयति॰ स्वप्न॰ स्वान॰ ऊऊ
म॰ यगाय॰ हाक्॰। धातु स्वप्न। स्तुकि॰ ऊिलकि॰ वमावा ॥ ८ ॥ कऊुया। वीहि॰

कायग्रहयक्षिखाखस्खानऽऽऽमयताय नानावनी। ध्रुसिऽऽ
ऽकि ऽीवदधिरुक ॥ २ ॥ जन्मयाखीहि मूरुग्रहयक्षि माताखा
नऽऽऽमयताय ायू। ध्रुरुतक विलिऽकि ऽीवदधि ॥ १० ॥
थन नवमारुकाथायना ॥ ॥ थनऽऽमानसूयोग्य॥ थनलिमूवार्यायुम्
रवन ऽासप्तषदिवावकाव विक्षाय। यूजा मूरुलिलवक्षावकं ॥ थनयैव
गव्यगोधन। कायवियऽमानं ॥ थन ऽऽमानयूजारुक्षि कायक ॥ ॥
थनलिवं रुमूमकुल ऽरुक्षि कलगा न्यान यिनाय महाकाव सग्वन

ग्यगत्रान मन थक्षियूजायाय ॥ ॥ २ ॥ ॥ थनमकुलयुजा ॥ धूय॥
नलाऽऽन ॥ मकुलमुखलुथनहाय ॥ मक ॥ ऊँ वऽयक्रऊँ ॥ वऽनथिसन्क ॥
मक ॥ ऊँ ऊँ रवँ सूलँ ॥ ऊँ मदघिवऽिरुववऽवीधऊँ ॥ थनुजाय ॥ ाकषे
घा ॥ खानवायमकुलना ॥ ऊँ मघिधविवऽिनीमहाप्रतीसवऊँ २ रुदूरखाहा
॥ मध्यस ॥ ऊँ ऽमृकवलवव२ युवँलविशुद्धऊँ २ रुदूरखाहा ॥ पूर्वस ॥ ऊँ
ऽमृकमृकविलाकिघि गर्कसंवक्रधीाकषेय२ ऊँ २ रुदूरखाहा ॥
॥ दक्षिनस ॥ ऊँ विमल विपूलऽयवल ऽमृकविवऽऊँ २ रुदूरखाहा ॥

॥यष्मिमस्त्र॥ ॐ रुद्रयरसिरुद्रय रूंद्विविलाकिघीय ॐ रूंरुद्रूंरुस्वाहा॥ ॐ रुद्रा॥
ॐ कलीय ॐ रूंरुद्रूंरुस्वाहा॥ मू ॥ ॐ कुमालीय ॐ रूंरुद्रूंरुस्वाहा॥ मे ॥ ॐ
कौकालीय ॐ रूंरुद्रूंरुस्वाहा॥ वा ॥ ॐ त्र्यंबकाय ॐ रूंरुद्रूंरुस्वाहा॥ ॐ॥
यंयायहावयूजास्तुति॥ मात्र प्रतिसरक्षाहि॥ ०॥ थनलिवितवयरुपू
जा॥ मूलकंघिन॥ पूर्वन्यास॥ ॐ मध्याकायस्वाहा॥ ॐ गीतांगाय स्वाहा॥ ॐ
ॐ वकाधूमायस्वाहा॥ ॐ वृधायस्वाहा॥ ॐ रागमसदायस्वाहा॥ ॐ मू
खुत्राकुमायस्वाहा॥ ॐ कुरुवर्धूयस्वाहा॥ ॐ मूरुकप्रियायस्वाहा॥ ॐ
प्रतिसरनमस्कुर्यं सरवकन्दुसन्दि॥ खुद्रपुकतिसरंग स्वाहा
हखो स्मकाठा॥ ४

ॐ
स्वाहिकरवस्वाहा॥ ॐ ऊर्ध्वमनस्वाहा॥ यंयायहावयूजास्तुति॥ सूर्यसाद्द
ममहीयूजवृक्षदवकुवृर्गुगनिश्वरगुहराकुकुजर्मीनमास्तुत॥
॥ ॥ थतमूस्त्राविगकिनकुत्रयूजायाय॥ ॥ कुक्किकावाहिनीवेव मग
नीवाघापूनवसुःघूधर्मगलसर्मीन्द्र जाश्वासारुवकिसफमी। कूस्थक
सफनकुजा पूर्वद्वात्रिकाक्लिकाय ॐ दंपूर्वायुमीकस्वाहा॥ पूर्व॥ मध्या
यामिकुघाकनीरुन्कुन्यारुतथेवव। कुक्काविजास्वाकिंथविभरवारुवकि
सफमी। कूस्थकसफनकुजादक्षिनद्वात्रिकाक्लिकायवजयूर्षायुकिकस्वाहा

हा॥ वक्षिन ॥ मूलवाराग्रहाकङ्काः ऋक्षामूलास्कथेवव। पूर्वकुवमाधारद्व
मूलविद्यवनस्कथा। ॐहाकसफनकङ्गाः यन्विमङ्गाविकास्किनायः वजयूर्ष्व
युक्तिङ्कस्वाहा॥ यन्विभ॥ धूनिसागकविमावेव ऽउरुकाङ्गयदेस्कथा। ववकीत्थे
नीत्येवरुवधीसफमी। ॐहाकसफनङ्कङ्गाऽकुवङ्गाविकास्किनायवजयूर्ष्व
युक्तिङ्कस्वाहा॥ऽउकुव ॥ यंवायद्वावयूजांस्तुति ॥ सर्ववावामङ्गाविधा सर्व
दुःखविनासका। ऊंकिमूंकियदास्त्रीवरुसमूहानमाम्यहं ॥ ॥थन
वऽमाङ्गावाजामूर्त्तिस्कानयूजा ॥ मा X ॥ ऊंधृकवास्त्रायस्वाहा॥ऊंविवूरका

यस्वाहा॥ऊंविवूणाक्षायस्वाहा॥ऊंकूवत्रायस्वाहा॥ यंवा X पूजा स्तुति॥
धृकवाईमङ्गावीवीवीकवर्ष्वं महाकुले। गीकविद्यामङ्गाकाङ्किगङ्गविवगत
मामयहं॥ ॥विवूधकंमङ्गावीवसर्ववागवसंकवं। वकवर्ष्वं महाकऽजनागवा
ऽजनमामयहं॥ ॥विवूणाक्षमङ्गावीवं सर्ववागवसंकवं। वकवर्ष्वं महाकऽजं
नागवाऽजनमामयहं॥ ॥कूवलंणीमङ्गानाथं सर्ववागधनयुदं। यक्षवाऽजंमङ्
ङ्गावीवीवाऽजवाऽजनमामयहं॥ ॥थन ऊंङ्गाविङ्गाकयात्रयूजा॥मा X॥
ऊंऊंङ्गायस्वाहा॥ऊंयमायस्वाहा॥ऊंवबूधायस्वाहा॥ऊंकूवत्रायस्वा

हा॥ ॐ ह्रीं अग्नेयस्वाहा॥ ॐ नैऋत्यायस्वाहा॥ ॐ वायुवेगायस्वाहा॥ ॐ ह्रीं ई
शानायस्वाहा॥ एवं पूजास्तुति॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मादयोमहाराजालोकपालावामदक्षि
णाग्रभूदिगस्त्रिकाबीजालोकपालवर्तनमामहे॥ ॥थनमन्त्रमालाबायाव
ब्रह्मास्थिस्थान॥ऊर्ध्व१०२॥ ॥ज्ञानब्रह्मास्थिस्थान॥ऊर्ध्व१०२॥ ॥
ऊर्ध्वमोगमथानप्रतिष्ठा॥ ॥ज्ञानब्रह्मास्थिस्थान॥स्थितिं दीयजाग॥
वाऊमरुद्भ्यायक॥सनावयाश्थणाक्षाठ॥ॐजायिकायश्था॥ॐवलि
प्राणशुक्रय।मासस्नात्वाहा ॐजयूनरुद्र॥ॐजाऊमावाल्लैहा

स्वाहा ॐतत्पुरुषायविद्महे॥२

वरस्त्रिवाकन॥ गमथ॥सर्व्वोत्रिभूपणप्रभन्यर्थं सर्व्वोपद्रवभावनं॥ग्रह
दाषशरमूर्छवशमनिकुर्वेन्तुसर्व्वदा॥ ॐ ऊमानस्य स्वादिग्यादिग्रहयोगाद्य
न्यर्थं आयुकामनार्थंशमनिकुर्वेन्तुस्वाहा॥ॐ ह्रीं ॐ ॐ॥ पूजास्तुति॥
थनलिवं विघ्नतर्थं ॐ वलिविय॥ ॐ नक्षेदक्षेभगमन्यादि॥ ॥
थनलिवं॥विघ्नतर्थं॥ ॐ ऊमानस्य धीर्यवब्रह्मादवीलेस्यादिन॥नथ
ग्रहं॥ऊर्ध्वपूजनयाय विघ्नतथ॥ ॐ ऊमानहाऊलर्यवान॥गमथ॥ऊ
र्ध्वमसरुलऊत्मसरुलंजावर्तवमा।समयश्वब्रह्मानारुविवाहनसंगाय।

ॐ वज्रकारुविष्यामि वाधिविकृतवदन। रुधागतकूलात्किममायस्थानं
सिद्धाय ॥ मूयमदिवसाक्षयङ्कामविदनूरुम-सन्दियाताहवयग्रःसर्ववूङ्गनि
मन्कुद्म ॥ स्वांकनकं ॥ स्वानङ्कनकंक ॥ धूययाय ॥ गाथ ॥ रुगवणऋजवक्रा
दवी ॥ ऋादिग्यादिनवग्रहमण्डलियाराऊनमास्फुत ॥ ॐक्रामग्रहमहानाथं
मण्डलीकनूधात्मका। शिखानामनूकीयार्थं-यूष्माकंयूऊनायव ।कस्मरुगवन
स्यरुगवनूयुक्तादं-कर्तुमर्हसि ।समन्ताद्रक्षुमांवृद्धाऊगङ्गकाक्रियास्कुल
दा।वाधिसिद्धायकविकृवऊवक्रुधाद्रुमूकनामावार्य नवरुग्यिष्यामि

मण्डले। मूयान्कार्सर्ववूङ्गायाः सिद्धिमतीयुदास्यथेकि ॥ ॥ॐनमार्य
वज्रकाये ॥नमानवग्रहस्यः॥ समन्ताद्रक्षुमां ॥ सूर्यउः रवादिसूरवदा
यका ॥ऊऊमानस्थानूकीणायः मागङ्कनुग्रहमण्डल ॥ऊऊमानस्यस्थानका
नकं ॥ ॥थनलिवविक्षानसी ॥ऊऊमानसी ॥ऋग्येयाय ॥ श्रीवे ।तीर्थंद
कं ॥उर्वाकुण्ड ॥ऋङ्कण ॥वत्-मूलि-रुव ॥थक्तिसिम्बस्थन ॥नकविकृन॥
ऋग्यादिवाकृन ॥ऊऊमानस्यग्रहणीजाप्तान्यर्थं-मूयूक्कामनार्थं यवन्मूल्का
वायशीयुक्तिस्वादवीरुद्दावक्रायस्यूदंमूर्घ्नपुष्किकस्वादा ॥ यूऊन ॥ॐम

सिद्धविद्याधिनिमहाघण्टिसवँऊँहृदयाय स्वाहा ॥ ज्वालावन्धन ज्वलनयक्षाय वौषट् स्वकपृष्ठपक्षिकुस्वाहा ॥ कवचाय ॥ दक्षघण्टाहानथयावज्र ॥ ॐ मांवज्रघटिते वज्रविद्युदक्षघानियोजयामि ॥ पैवा ॥ प्रतिसरन मस्फुरी सरवकुन्दसदिर्हि । शुद्धयवज्रिनिरासिवज्रसत्वात्मकोपवा ॥ मूल गन्धपुष्पधूपदीपयक्षायवौषट्तेवद्यगीप्रतिसरादवीमूर्त्तिधिष्ठितत्सर्वयक्षि यूंहूंमस्फुसर्वोदावदारुवन्धु ॥ ० ॥ सार्वसपुमर्द्दनी ॥ मूर्घ्नयूंवेवन् ॥ वन ॥ ॐन्द्रनील ॥ वाजन ॥ ॐजुमानसयग्रहयीजागन्नर्थं मायूस्वा

वाय शीसार्द्धसयमर्द्दनीदवीहृदावज्राय ॥ ॐजूंघपक्षीकुस्वाहा ॥ पूजन ॥ ॐ जूंमकवचवनरपुवनविघुद्धवँऊँहृदयस्वाहा ॥ नीँवन्धन नीलयक्षा यवौषट् नीलयूंणनियोजयामिहं ॥ धूपकुंकुम ॥ ॐ किर्यवामकवल्लि ॥ द क्षघण्टाहानथयावज्र ॥ ॐमांवज्रघटिते वज्रविद्युदक्षघानियोजयाम हं ॥ पैवा × ॥ ॐसूंवघूंमहाधावज्रधात्माहीयघी । दुदान्करुणसंहन्तीक्षो धवजीनमामहं ॥ मूलगन्धपुष्पधूपदीपः यक्षायविघ्नेवद्यादिसार्द्धसयम र्द्दनीदवीमूर्त्तेनिधिष्ठितसर्वविघियिर्यूंहूंमस्फु ॥ ० ॥ गीमहामायूरीद

वीसकमूर्घवक्त्रा ॥ पूर्ववत् ॥ वक्त्रपृष्ठवामविनक्त्र ॥ ॐ ऊर्ध्वमानस्यगरुडपीठायार्घ्यं आयुष्कामनार्थंयमस्काराय श्रीमद्गामायूरीरुद्रावकायं हृदयमूर्घ्ययौस्वाहा ॥ पूजा ॥ ॐ ऊर्ध्वमरुविद्याक्तिनिगरुडं सवक्त्रशिखाकवचयहूँ शरुट्रुश्स्वाहा ॥ गौरवन्दनं श्रीमयश्रुपवीतं श्रीमपूर्ध्वयुगीकुस्वाहा ॥ धूपं श्रीरवन्दु ॥ ॐ किर्यिवामृत ॥ दक्षघाडाकानथयावक्त्र ॥ ॐ मीवऊरुघटिकावक्त्रवक्त्रदक्षघ्नसंयुरासयामिहं ॥ यवा ४ ॥ माहाश्रुनारुवादवीरुमवर्ध्वयुरुकरीमायूरीनमस्करुविद्यावाक्षीनमानमः ॥ ऊर्ध्वगश्चपूष्पधूपदीपयश्रुपवीतनैव

ध्वमूर्ध्वविधिवः सर्वयविपूर्ध्वमस्तु ॥ ० ॥ श्रीमद्गामन्त्रानूसारीदवीरुद्रवक्त्र ॥ मूर्ध्वविधिपूर्ववक्त्र ॥ वक्त्रमधिकपृष्ठ ॥ ऊर्ध्वमानस्यगरुडपीठायार्घ्यं आयुष्कामनार्थंयमस्काराय श्रीमन्त्रानूसारीदवीरुद्रवक्त्रायहृदमूर्ध्वपूजीकुस्वाहा ॥ पूजा ॥ ॐ विमलविपूलऊर्ध्वबलमरुविद्रजहूँ शरुट्रुश्स्वाहा ॥ वक्त्रवक्त्रनवक्त्रयश्रुपवित्रवक्त्रयुर्ध्वंयकिकुस्वाहा ॥ धूपवस्तुरी ॥ ॐ किर्यिवामृत ॥ ध्वमीवरुकघटिकायमविद्रुवक्त्रधौंसंयुरासयामि ॥ यि ४ ॥ वायूवक्त्राविघ्नहाक्षि विकवाघ्राडंघ्रिविधीयमरागनूघदवीनमस्करुडगरुमाद्रवी ॥ ऊर्ध्वगश्चयश्रु

यवीरुधूपदीपनैवद्यसहितैर्सर्वविधियुक्तंपरिपूर्णमस्तु ॥ ० ॥ शीघ्र
मवकीदवीसकल्पसूर्य ॥ पूर्ववत् ॥ अत्र मन्त्रोद्धारः ॥ ऊँ मानस्यगुह्यीकाभ्यां
न्यर्थं मायुष्कामनार्थं प्रवसत्कानाय शीघ्रमवकीदवीरुद्धातकायकूर्दमंघृ
प्रतीक्षस्वाहा ॥ यूंजा ॥ ऊँरुलरुमरुलरुन्द्रुवलविलाकिमियहूँरुहूंरुस्वा
हा ॥ हूँशीघ्रवल्गन्तरुशीघ्रयङ्कापवीतरुशीघ्रयूंशीघ्रप्रतीक्षस्वाहा ॥ धूपःशील ॥
शुक्लिपिवासस्क ॥ न्यूमीरुजकघटिकविंशवर्जविंशदक्षघसंपुरासयामरु ॥
॥ × ॥ वैभूर्यसकलिहान्मदनावित्सकविंशमां क्षाक्षाद्विंशदनीरुन्निन्मस्कदिवा

सूचि १

रात्रिकिरामलेदक्षघरात्रिकिकनन्याभूयवि

वृणिधि ॥ मूरुगमायङ्कापवीतयूंमधूंयदीपनैवद्यश्रीयङ्कयक्षादवीरुसर्वविधि
यसर्वविधिपरिपूर्णमस्तु ॥ मायूंनिराग्यमस्तु सुशीतलदारुवन्तु ॥ ० ॥
थनलिवैंनवग्रहादिपूजामाद ॥ मूत्रादि ॥ ऊँसूर्यादित्याय यूंवीरिमूरवाय कलिंग
दक्षेरुवाय सप्तसप्तिजात्राय विंशघातरुद्राय काश्यपगूजाय रुक्तियरुद्रा
यन्यूंचन्द्रादित्यदेवताय मंगल्याग्नियन्याधिदेवताय रिंवधगन्धाय मूत्रेय
मक्षित्रिशूयङ्कदस मूमिकरुजसिरुवाय ऊँरुमानस्यमादिगुह्यसुशीतलमन्त्रार्थं
मायुष्कामार्थं ॥ दं मादित्याय मूर्यंयमिङ्कस्वाहा ॥ ॥ यूंजा ॥ ऊँमघात्का

यस्वाहा ॥ वक्कवन्धनम् वक्कयक्ष्मयवीनाय वक्कपूर्शनिर्यातयामि ॥ क्षीरादनं
निर्यातयामि ॥ घृतकूडवू ॥ दक्षघा ॥ ॐ भूतादिभ्याय ॥ कपिलसर्षपवातीयूड
नीयाज्यलाहिनी तीर्थदवामयीजमान ॥ वक्षस्त्रियुयक्ष्म ॥ जजमानस्य भूतादि
भ्यायजक्षिन सर्वीयदवत्यागयीजमानस्यार्थे भूमीवजनघटितयुक्तिविम्ब सवत्स
धेनू दक्षघा सांविक्षनावीहियातुनियातयामि ॥ मात्र ॥ ॐ भूतादिभ्याय ॥ कि
कीणसवत्सावलोकवत्सर्वोषधीरसमूलाङ्किपूर्यजमी ॥ रोगाहतियव
न नाशस्थानस्कुरुखाखुवेङ्गादिदक्षयैयासूयाहि ॥ मूक्ष्मगन्धपूर्यधूपयि

नागसिंहवर्मकासुंयमनागसमुद्रहि ॥ सक्षाध्यगमाखुः वस्तुर्यसमाम

नेवद्यादिकन्तवविधयैपनियूक्षुमस्तु ॥ ० ॥ सामसक्कमूर्घ ॥ ॐ तमासामाय ॥
पूषाक्रिमूषाय क्षीरादमथनाक्रवाय कमूक्रवकुदेक्षेजाताय कक्रिकानक्षाय
भूतयजनाथाय उमादिदवताय वैश्यजाताय जलादिविक्षूयक्रदगोक्षाय
यजदवताय ॥ जजमानस्य सामग्रकणीजगन्ध्यर्थे भूयूकामार्थे भूदसामा
यभूपैयमिक्षस्वाहा ॥ मूडा ॥ ॐ गीतांगवस्वाहा ॥ ॐ वैश्यवन्दनादियूडा ॥ घृत
क्षीरवधु ॥ घृतादनंनिर्यातयामि ॥ दक्षघा ॥ ॐ तमासामाय ॥ क्षीरवत्क्षीरवधू
धानी मंगलानाक्षमंगलं विष्णुनांविद्युतानिर्यक्रवजनिक्रियायक्ष्म ॥ जजमानस्य

ॐ ह्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमते पार्श्वनाथाय सर्वविघ्नविनाशिने सर्वसिद्धिसंपदां दात्रे सर्वजनवशंकराय सर्वग्रहोपसर्गनिवारणाय सर्वशत्रुसंहारणाय सर्वदुष्टमृगभयनिवारणाय सर्वव्याधिविनाशनाय सर्वदुरितदुष्टस्वप्नविनाशनाय सर्वाभीष्टपूरणाय चिन्तितवस्तुदायकाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं असिआउसा नमः

ऊँ ब्रह्मणे मूर्त्तये मुखाय दीप्तये आदर्शाङ्गाय अनन्तनेत्राय अजराय
ललाटाय वैश्वजाङ्गाय वृक्षाय नारायणाय विश्वयोनिवदनाय ऐश्वरि
कुण्डले बलकूलदक्षाय ऊर्जमानस्य वृक्षायन्नग्रहीष्यन्नन्वर्थं मूर्युक्षा
र्थे स्वाहा इदं मूर्ध्नेप्रतिकृत्यै स्वाहा ॥ ॐ वृक्षाय स्वाहा ॥ यीम x ॥ धूपगन्धक ॥ कु
ङ्कि मृग मास ॥ ॐ नमो वृक्षाय ॥ द्विरघागद्विमुहूर्तमवीजस्य विरुक्षस्य च मू
र्धाग्रस्य ललाटस्य भ्रुवोर्नासिक्ययोश्चक्षुषी ॥ ऊ वृक्षेभ्यो नित्या यद्ववा गृहीता
नन्वर्थं मूर्मांवर्जगच्छिर सर्वं मूर्धदक्षधा यीत्सर्षपवीहियाश्च निर्याताया

एष्यन्नुत्सन्नो ज्ञानी सर्वोविसृजितास्ति यमास्तीद्रसोनि वधर्ज नम
मिहीं ॥
मित्वा ऊतमावृधाय ॥ ऊ कपर्दावृक्तनकाञ्जलवधूकाय ॥ अनन्तयसरूसरु
वाणिदन्तमास्कुदाहिध्यदा सर्वेजगतीविषक्ति कुल्मानयारुवसूक्ष्म
क्षिप्रसन्ते ॥ सूत्र x ॥ ० ॥ वृहस्पतिसवजूर्घ ॥ ॐ नमो वृहस्पत ॥ नि
ग्रनाहिमूरवाय निष्कूदलोहरुवाय एकादशाङ्गाजाय ऊर्ध्वरखा शुचीरूपाय
शूभवसाणजाय वल्कादिदरुपाय वृहस्पतय गोत्रमसाषिविकूपकुदलो रू
न्द्रदवाय वलकूवेदवाय ऊर्जमानस्य यद्गृहीष्यन्नन्वर्थं मूर्युक्षार्मो
र्थे स्वाहा वृहस्पतेजूर्ध्वयुक्तिकृत्यै स्वाहा ॥ पूजा ॥ ॐ हाग्मसादायनमस्ता

ह्रां ॐ गीतवन्दनापूजा ॥ धूपमधूर्धूपं निमन्त्रयामि ॥ दूधविद्या ॥ ॐ
नमोवटुकाय ॥ गीतवक्त्रयुगंयस्माद्वासुदेवस्यवल्लभं यदानकस्मिविष्णु
वटुमानिक्षयङ्कम ॥ ऊं भैरवहृदयाम्बुजनिकायजवत्रागणीशगणाक्षर्थं
ह्रूमां× गीतवक्त्रयुग सर्वकुटुम्बाय्यवीहिपात्रं नियोजयामि ॥ सु ॥
ॐनमोवटुकाय सत्यालिङ्गाकुलसंयुक्तदेवाय ऊर्ध्वमुखाय त्रिविक्रि
याधिष्ठात्रे सर्वापत्सकलमंकुनमस्कृतव आयुश्रियंजनयजमानिम
न्द्रयुग्धोजूरुगम ॥ ० ॥ शुक्लसकजूर्ये ॥ ॐनमोशुक्लाय ॥ णि
१ गक्रांचनवल्लभं सर्वशत्रुविनाशनं सर्वदुष्टजनानां नाशनमिनलक्ष

२ ॐशुक्लवाक्ष्मायनमस्वाहा ॥ ४

मोहिमूरवाय रागवाहवाय नवमांजात्राय पूषनक्रीताय रावंगोम
क्षाय ब्रह्मजात्राय शुक्राय गङ्गाधिदवताय वेदावनकूलाहवाय शुक्र
वासशुक्लयज्ञोपवीताय ऊं ऊं मानस शुक्लागहापन्नंपीठागंस्वर्थं स्वाय्
क्षामार्थं ह्रूंदिघु×मूर्धापूजिक्रस्वाहा ॥ ज्वेॐवन्दनम ॥ कर्णधूप ॥ क्षीरजा ॥
ॐनमोशुक्लाय विष्णुहंमघवनूपत यस्मान्ममसंहृत वेन्द्रक्रीवाहनानिर्ग
वटुमानिक्षयम ॥ ऊं शुक्लोपऊनिकसर्वोपदवागणीशगांस्वर्थं ह्रूमां×क्ष
ध्रवक्रूधाकलावहीहिपात्रं नियोजयामि ॥ सु ॥ ॐनमोशुक्लाय ऊर्ध्वद

हृदाय सफट्मांजाताय अघोरघण्टकजाय साद्यजाताय विश्वयुक्तादिर्व
दनाय अघोरमुखाङ्गाय सद्योजाताय गायत्रीकल्पदारुवृक्षयज्ञा
दिधवनाय विविधयूथविविधवासाय विविधयज्ञयजीनाय ऊर्ध्व
मुखकवचास्त्रत्रयीठाभीष्टार्थं आयुष्कामार्थं ॐ दीक्षाकल्पसर्वयुक्तिकस्वा
हा ॥ ॐ श्रीकण्ठवसुदा ॥ विविधयूथादियूजा ॥ सिद्धायपूय ॥ शुक्लिरव
लूमरक्ष ॥ दक्षिण ॥ ॐनमोऽकल्पव ङ्गाख्यं सर्वयज्ञानां मेगवास्त्रयवस्कि
लामस्त्र हृदयं जात्रशुद्धी ।

ग्रा ङ्गानं विघ्नसातिर्हृदयगन्धियुयङ्कम ॥ ॐ ङ्गापजनिकसर्वोपद
वशाग्रीकोऽभंहार्थं । ॐ मोऽजलयदिक्प्रतिष्ठिमूङ्गगदङ्घाकुलधृवीदि
ग्रातनिर्ग्रोकयामि ॥ ङ्ग ॥ ॐनमोऽकल्पव लाङ्गुहाङ्गुलिमूषपवीक्षिणी
या लिंगपुदयोयकिय ः हमसियुसन्तकला ङ्गकवङ्गः खविनासकाशी ङ्ग
ङ्गाङ्गगजिमसूरंकूवृतमासु ॥ ङ्गङ्गगध्य ॥ ० ॥ ॐसङ्कमूघि ॥ ॐनमो
ऽजलद्यवनाय ॥ विश्वाधनकूवेदवनाय सूर्यासनोपस्किनाय शुक्लवासपूष्प
ङ्ग ङ्ग महाशोऽवाङ्गुलमसभनिनी सर्वविघ्नविङ्गलवैलजङ्गङ्गलाङ्ग

धूपदीपगन्धपुष्पनैवेद्यताम्बूलदक्षिणाभिरभ्यर्चयामि ॥ ॐ ह्रीं क्रौं
ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं क्लीं ऐं नमो भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय त्रैलोक्यपूजिताय
त्रैलोक्यवशंकराय सर्वजनहृदयसंक्षोभणाय मम सर्वकार्यसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥
ॐ ह्रीं क्रौं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं क्लीं ऐं नमो भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय
त्रैलोक्यपूजिताय त्रैलोक्यवशंकराय सर्वजनहृदयसंक्षोभणाय मम सर्वकार्यसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥
ॐ जम्भनाय स्वाहा ॥ ॐ जृम्भनाय स्वाहा ॥ ॐ जृम्भय जृम्भय स्तम्भय
स्तम्भय मोहय मोहय सर्वदुष्टान् सर्वदुष्टस्त्रियः सर्वपुरुषान् सर्वदुष्टग्रहान्
सर्वदुष्टविघ्नान् सर्वदुष्टभयानि सर्वदुष्टोपद्रवान् सर्वदुष्टरोगान् सर्वदुष्टशत्रून्
सर्वदुष्टकुलानि सर्वदुष्टकर्माणि सर्वदुष्टमन्त्रान् सर्वदुष्टयन्त्रान् सर्वदुष्टपत्रान्
सर्वदुष्टपुष्पान् सर्वदुष्टफलान् सर्वदुष्टबीजान् सर्वदुष्टोपदेशान् सर्वदुष्टनिषेवणानि
सर्वदुष्टप्रयोगान् सर्वदुष्टविषाणि सर्वदुष्टकृत्यानि सर्वदुष्टवस्तूनि सर्वदुष्टाचारान्
सर्वदुष्टविचारान् सर्वदुष्टोच्चाटनानि सर्वदुष्टविद्वेषणानि सर्वदुष्टवशीकरणानि
सर्वदुष्टस्तम्भनानि सर्वदुष्टमोहनानि सर्वदुष्टजृम्भणानि सर्वदुष्टमारणानि
सर्वदुष्टभ्रामणानि सर्वदुष्टक्षोभणानि सर्वदुष्टविद्रावणानि सर्वदुष्टाकर्षणानि
सर्वदुष्टवशीकरणानि सर्वदुष्टछेदनानि सर्वदुष्टभेदनानि सर्वदुष्टहननानि
सर्वदुष्टदहनानि सर्वदुष्टपचनानि सर्वदुष्टविलापनानि सर्वदुष्टशोषणानि
सर्वदुष्टोत्सादनानि सर्वदुष्टविध्वंसनानि सर्वदुष्टविद्रावणानि सर्वदुष्टनिर्मूलनानि
कुरु कुरु सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय
बुद्धिं विनाशय विनाशय अमुकं मारय मारय शीघ्रं शीघ्रं शत्रून् उच्चाटय
उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं क्रौं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं क्लीं ऐं नमो भगवते
श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय त्रैलोक्यपूजिताय त्रैलोक्यवशंकराय सर्वजनहृदयसंक्षोभणाय
मम सर्वकार्यसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ जम्भनाय स्वाहा ॥ ॐ जृम्भनाय स्वाहा ॥
ॐ जृम्भय जृम्भय स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय सर्वदुष्टान् सर्वदुष्टस्त्रियः
सर्वपुरुषान् सर्वदुष्टग्रहान् सर्वदुष्टविघ्नान् सर्वदुष्टभयानि सर्वदुष्टोपद्रवान्
सर्वदुष्टरोगान् सर्वदुष्टशत्रून् सर्वदुष्टकुलानि सर्वदुष्टकर्माणि सर्वदुष्टमन्त्रान्
सर्वदुष्टयन्त्रान् सर्वदुष्टपत्रान् सर्वदुष्टपुष्पान् सर्वदुष्टफलान् सर्वदुष्टबीजान्
सर्वदुष्टोपदेशान् सर्वदुष्टनिषेवणानि सर्वदुष्टप्रयोगान् सर्वदुष्टविषाणि
सर्वदुष्टकृत्यानि सर्वदुष्टवस्तूनि सर्वदुष्टाचारान् सर्वदुष्टविचारान्
सर्वदुष्टोच्चाटनानि सर्वदुष्टविद्वेषणानि सर्वदुष्टवशीकरणानि सर्वदुष्टस्तम्भनानि
सर्वदुष्टमोहनानि सर्वदुष्टजृम्भणानि सर्वदुष्टमारणानि सर्वदुष्टभ्रामणानि
सर्वदुष्टक्षोभणानि सर्वदुष्टविद्रावणानि सर्वदुष्टाकर्षणानि सर्वदुष्टवशीकरणानि
सर्वदुष्टछेदनानि सर्वदुष्टभेदनानि सर्वदुष्टहननानि सर्वदुष्टदहनानि
सर्वदुष्टपचनानि सर्वदुष्टविलापनानि सर्वदुष्टशोषणानि सर्वदुष्टोत्सादनानि
सर्वदुष्टविध्वंसनानि सर्वदुष्टविद्रावणानि सर्वदुष्टनिर्मूलनानि कुरु कुरु
सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय
विनाशय अमुकं मारय मारय शीघ्रं शीघ्रं शत्रून् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट्
स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं क्रौं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं क्लीं ऐं नमो भगवते श्रीमते
त्रैलोक्यनाथाय त्रैलोक्यपूजिताय त्रैलोक्यवशंकराय सर्वजनहृदयसंक्षोभणाय
मम सर्वकार्यसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ जम्भनाय स्वाहा ॥ ॐ जृम्भनाय
स्वाहा ॥ ॐ जृम्भय जृम्भय स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय सर्वदुष्टान्
सर्वदुष्टस्त्रियः सर्वपुरुषान् सर्वदुष्टग्रहान् सर्वदुष्टविघ्नान् सर्वदुष्टभयानि
सर्वदुष्टोपद्रवान् सर्वदुष्टरोगान् सर्वदुष्टशत्रून् सर्वदुष्टकुलानि
सर्वदुष्टकर्माणि सर्वदुष्टमन्त्रान् सर्वदुष्टयन्त्रान् सर्वदुष्टपत्रान्
सर्वदुष्टपुष्पान् सर्वदुष्टफलान् सर्वदुष्टबीजान् सर्वदुष्टोपदेशान्
सर्वदुष्टनिषेवणानि सर्वदुष्टप्रयोगान् सर्वदुष्टविषाणि सर्वदुष्टकृत्यानि
सर्वदुष्टवस्तूनि सर्वदुष्टाचारान् सर्वदुष्टविचारान् सर्वदुष्टोच्चाटनानि
सर्वदुष्टविद्वेषणानि सर्वदुष्टवशीकरणानि सर्वदुष्टस्तम्भनानि सर्वदुष्टमोहनानि
सर्वदुष्टजृम्भणानि सर्वदुष्टमारणानि सर्वदुष्टभ्रामणानि सर्वदुष्टक्षोभणानि
सर्वदुष्टविद्रावणानि सर्वदुष्टाकर्षणानि सर्वदुष्टवशीकरणानि सर्वदुष्टछेदनानि
सर्वदुष्टभेदनानि सर्वदुष्टहननानि सर्वदुष्टदहनानि सर्वदुष्टपचनानि
सर्वदुष्टविलापनानि सर्वदुष्टशोषणानि सर्वदुष्टोत्सादनानि सर्वदुष्टविध्वंसनानि
सर्वदुष्टविद्रावणानि सर्वदुष्टनिर्मूलनानि कुरु कुरु सर्वदुष्टानां वाचं मुखं
पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय विनाशय अमुकं मारय
मारय शीघ्रं शीघ्रं शत्रून् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं क्रौं
ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं क्लीं ऐं नमो भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय
त्रैलोक्यपूजिताय त्रैलोक्यवशंकराय सर्वजनहृदयसंक्षोभणाय मम सर्वकार्यसिद्धिं
कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ जम्भनाय स्वाहा ॥ ॐ जृम्भनाय स्वाहा ॥ ॐ जृम्भय
जृम्भय स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय सर्वदुष्टान् सर्वदुष्टस्त्रियः सर्वपुरुषान्
सर्वदुष्टग्रहान् सर्वदुष्टविघ्नान् सर्वदुष्टभयानि सर्वदुष्टोपद्रवान्
सर्वदुष्टरोगान् सर्वदुष्टशत्रून् सर्वदुष्टकुलानि सर्वदुष्टकर्माणि
सर्वदुष्टमन्त्रान् सर्वदुष्टयन्त्रान् सर्वदुष्टपत्रान् सर्वदुष्टपुष्पान्
सर्वदुष्टफलान् सर्वदुष्टबीजान् सर्वदुष्टोपदेशान् सर्वदुष्टनिषेवणानि
सर्वदुष्टप्रयोगान् सर्वदुष्टविषाणि सर्वदुष्टकृत्यानि सर्वदुष्टवस्तूनि
सर्वदुष्टाचारान् सर्वदुष्टविचारान् सर्वदुष्टोच्चाटनानि सर्वदुष्टविद्वेषणानि
सर्वदुष्टवशीकरणानि सर्वदुष्टस्तम्भनानि सर्वदुष्टमोहनानि सर्वदुष्टजृम्भणानि
सर्वदुष्टमारणानि सर्वदुष्टभ्रामणानि सर्वदुष्टक्षोभणानि सर्वदुष्टविद्रावणानि
सर्वदुष्टाकर्षणानि सर्वदुष्टवशीकरणानि सर्वदुष्टछेदनानि सर्वदुष्टभेदनानि
सर्वदुष्टहननानि सर्वदुष्टदहनानि सर्वदुष्टपचनानि सर्वदुष्टविलापनानि
सर्वदुष्टशोषणानि सर्वदुष्टोत्सादनानि सर्वदुष्टविध्वंसनानि सर्वदुष्टविद्रावणानि
सर्वदुष्टनिर्मूलनानि कुरु कुरु सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय
जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय विनाशय अमुकं मारय मारय शीघ्रं
शीघ्रं शत्रून् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं क्रौं ह्रूं ह्रौं
ह्रः श्रीं क्लीं ऐं नमो भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय त्रैलोक्यपूजिताय
त्रैलोक्यवशंकराय सर्वजनहृदयसंक्षोभणाय मम सर्वकार्यसिद्धिं कुरु कुरु
स्वाहा ॥ ॐ जम्भनाय स्वाहा ॥ ॐ जृम्भनाय स्वाहा ॥ ॐ जृम्भय जृम्भय

क्ष॥ ॐ ॥ थनलिवं ॥ दिगवलि ॥ ॐ धरधीधरधीधरधंगनि हुंड
निपहिंजनीकिंपुरुष सकरसारथिसारवति गूलधर गूलधारधी गूढवर
रघ स्कामवति सारथ्ये अमुकिस्वस्कन्दा मुकजमानस्य मुकस्यपुत्रस्यादि
लिखाहा ॥ यूपे ॥ अनिकामवति कोलिकावति किंकसि किविधु किवसी
धरधीवरुधी रुमिधारनि हिमवति स्कानिधरधि मालाग्रे अमुकिस्वस्य
स्कन्दानपुमुकजमानस्य दक्षिनस्यादि लिखाहा ॥ दक्षिणे ॥ ॐ धर्मव

लाग्रे वलवति रवति विभवंगे विवलिलासनरवि कारवधाविधि व
नि विवाजिनिविधामिवधुवनि मूवर गांस्वस्कन्द मुकजमानस्य यूपि
मस्यादि लिखाहा ॥ पश्चिमे ॥ ॐ रवजेरवजगन्ध विद्धलेचक मजान वज्रव
न्दवण वरीमर्थवनरवराग्रे कूटिवकराग्रे एकाक्षिवर्गवति विषकालिस्य
स्कन्द मुकजमानस्यादि लिखाहा ॥ उत्तरे ॥ ॐ वज्रवज्रमयाधवज्रस्वर वजवज्र
याधवजधर स्फिर सावस्फूवरस्फूवनि स्फूधनि स्फवनि सूवरवराग्रेयाधि

सावलिं सांन्यासस्यकुरुकुरुमानस्यदिग्विदिक्षस्वाहा ॥ विदिगस् ॥ यक्ष
वलि ॥ ॐ क्रूंद्रयमवरुणकुबेरवनुषान्यग्निनैऋत्यवायूवा ॅसमविकीवलि
पक्षादवेशावतांःसपरीवाराँ बलिं सदवीदवतावाःसाणायाःसप
रिवाराभ्यन्द्रोक्षणिताःमहादिशाःसपरीकल्पंःसपरिवारबलिं क्रूं मघवा
यावमनीयं पुष्पधूपदीपंगन्धनैवद्यंवलिंवदास्यामि संप्रीक्षागृह्णकुरु
ष्वकुरुकुरुस्वानकुणिवकुरुकुरुकल्पा ममसर्वसत्वातावार्यूवनवधुमावा

ॅयंसमाकियूंस्थाकियोंतिवदवधं सर्वदाकूंरुरुवजघरुरुघयजिस्वाहा
वादिग्यावलिं रथनलिंवपिवरुणावलि ॥ ॐ महायक्षिसर्व महाविद्याराज्ञी
सर्वविद्याधिपतय क्रूंवलिगृह्ण ममसर्वसत्वानांवशमाकियूंस्थिकुरु सर्वदु
ष्टनिमित्तावाक्षसावादाँमारयरुमर्दयरुहिंजयरु मांसर्वसत्वान्वशंकरुरुरुरु
रुरुस्वाहा ॥ यक्षिसर्वावलि ॥ ॐ महासाहस्रप्रमर्दनिविद्याराज्ञीसर्वदुष्टदु
वारनिमित्तसर्वसत्वानांवशमाकियूंस्थंकुरु सर्वदेवतागयरुगन्ध

द्वीसूत्रगरुडकिन्नरमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचडाकिनीकूष्माण्डयक्षमथन
विघ्नगणयक्षमहासाहस्रप्रमर्दनि बलिं गृह्ण ममसर्वसत्वानांवशमानय ह्रूँ
फट्स्वाहा ॥ साहस्रप्रमर्दनिबलि ॥ ॐ माहामायूरीमहाविद्याराज्ञीसर्वदु
ष्टप्रदुस्वप्ननिवारणीअपराजितेकुरुकुल्लेकुरुकुल्लेसर्वदुष्टानांमुखंबन्धयबन्धय
गच्छद्वीसूत्रगरुडकिन्नरमहोरगयक्षराक्षसभूतपिशाचडाकिनीकूष्माण्डयक्षमथन
कुरुकुरुजयजय ह्रूँ बलिं गृह्ण ममसर्वसत्वानांवशंकरु ह्रूँ फट्स्वाहा ॥

हामायूरीबलि ॥ ॐ महामन्त्रानुसारिणी ह्रूँ क्षुद्रयक्षडाकिनीग्रहनिग्रहणी ह्रूँ बलिं गृह्ण
ममसर्वसत्वानांवशमानय पुष्टिंकुरु पुष्टिंकुरु वशीकुरु सर्वदुष्टसत्वांवशमानय वि
घ्नगणयक्षजीह ह्रूँ फट्स्वाहा ॥ मन्त्रानुसारिणिबलि ॥ ॐ महाशीतवती
सर्वदुष्टप्रदुस्वप्ननिवारणीममसर्वसत्वानांवशमानयपुष्टिंवशीकुरु सर्वदुष्टग्रहदुष्टना
गग्रहदुष्टयक्षग्रहजयग्रहजयग्रहं बलिं गृह्ण ममवशंकरु ह्रूँ फट्स्वाहा ॥
॥शीतवतीबली ॥ ॥ ॐ जाह्रूँ जाह्रिणि सामजूगमवृषवहसमलिंगकु

नमिश्वरवाङ्मुकुख्यः सयवीक्रख्-सयविवावख्यः॰ङ्ङ्वलियायावमनी
यंपूषंधूर्वीर्यंवलिंवदास्यामिस्वीलाग्ट्कन्डिंघन्लुरवादन्क्षिवन्लु
दस्यरुल्लादानणंकसंवसलानावायूवलवंधुमांत्रांगंगनिंकयुंखिंधुंतिं
गीतिंवन्दक्षंसंवाङ्ँ२ख्ङ्ङ्वज्रवत्क्लाम्लपयंतिस्वाहा॥ग्रहवलि
थनलिवि॥महावलिवियं॥वर्ल्यावनङ्गय॥दक्षवलिवियं॥पवि
त्रावयूजा॥नवग्रहस्नानकलशं॥ ॥रक्षानमाम्रुकसूनग्रहयूजियं

सत्वयायरुवज्ञाक्लकवायं-निर्द्रोमायदायंधवत्लंरुयुदा-वत्लंन्रया
यंग्रुवंवसवधीगाक्षरंलिं॥ग्रहविर्जन॥थनगिंकयुंतिथा-ग्रुवंमधुवदन
कं-विसर्जन॥नमः-गा-सं-वंवस्त्रादिङ्गाय॥सहस्त्र्य॥थविंवं-स्नानम
नकं-गाथसमाक्रयाय॥यूथियूजा॥ववंक्लंदंक्लधानायंकंयथसाङ्गाथं॥
क्लंयूजा-दंक्लधा॥क्लमायनं-॥कलशलस्थं-सूयनं-कंय॥ग्लगीता
वियं-कथनं॥थनलिविं-यंवदतीविंङ्गाय॥थनसमयावंक्लंय॥

पिवन्तुवर्दं हूंदिवकर्मसङ्गवेहूंग
न्तु॥ ॥हूंब्राह्मवजिसहृदवसयं
हूंदिवलिगृह्नन्तुमविसिद्धे।अग्नि
यमोनेसयहयेनिव आवियनिवा
यधनाभियन्त्र॥ ॥हूंशाकम्भाभिय
मिथदवा सउद्धेवब्राह्मेपिमाम:
हाव।दवासमन्नाउविघवनाग
धवामनाउअगनसमका॥ ॥
अमियमित्रवकनिवदनेन्तु खवकस्व
कास्वदिशासहूं। एहन्तुआस
वासेन्या सपत्नमिसखजनस
मका॥ ॥धर्पवलिपृथिवलिनेवर्य
यन्तुजिघन्तुवर्द। हूंदिवक
र्मसङ्गलीरुगलु नकृकम्भ्वा
नुवा॥ ॥पवमकंदवगृह गामवा
जवपथेकाव। सन्यागाधविलेष
न रोजनस्कलगमरुत्सां॥ ॥
मानोमाउविलोषन रक्षन्तुवजमस्त
वृद्धा दवदत्तसमाशुक कोकुकनो
स्तीरुसनन्तोमीचविनायका॥ ॥

चामहिधामिहिरुसी उमादवीहु
सिरुवा।जयावविजयावैव अजि
तासञ्जयवाजि॥ ॥हुडुकाविमरुका
लिस्वकाविहुयागिनी।हूंन्दी
चन्दीधानीरुद्री लक्षाकिनीकद
म्बवी॥ ॥कमाजिदीपिनीरुचि
न्यायमावल्किकयागिनी।धात्रवया
सलावृधा हूंकृवयाकलाविनी॥ ॥
कपालमालमाल्यानां खट्वांगायम
रुद्धिका। खमरुत्पावसुरुक्षा
वजहस्ताधनुर्मखा॥ ॥पञ्चदाक्षि
नीमलामस्व सर्वमंकिनसाधका।धा
गमशुलमहाबाही वजज्वलीसुर
मथा॥ ॥मथागमामालाकाय निर्ज
जनीयानसूदका। हूंदिवजम्बनी
ब्राह्मा आवादेसविसन्धिका॥ ॥
हुंकंकंकदनु ववदन। खख
खादन सर्वदुष्टांहन॥ घाटय२
जजमानस्य ४ हूं२ रुद्र२स्वाहा॥
॥ ॥शुरुमन्तु॥

य ॥ खवबाह्याथनङ्कनदंश ॥
ॐ कङ्कदत ४ ॥ मूत्रेन ॥ ॐ व
दन ४ ॥ नेत्रस्य ॥ ॐ खर२
खादन ४ ॥ वायुव ॥ ॐ दन२घोर२
घादय ४ ॥ स्त्रीभग ॥ ॐ उ
ल्लूखूवलिमहेवेवनू ॥ पव
मानकन मूत्रंपूवयिला
हलग्रदला उल्लूखूमूड
याबलीमर्डय ०गू ॥ ॐ स्व
वैरुकखखखादि२ उल्लू
खायखाहा ॥ धावर ॥ घाव
कयावा खायावबलिसव
यक ॥ ॐ ४ नीलिकूवेतु
खलिखादा ॥ पैर पूसुनि ॥
सायखादविदन्धकश्ववनू
घसीमाहवायावकंकवा
उपवनावविनशियावव
कासूयाशुवहिनिमानू

विर्यथिकं ॥ खजमगुकाह

वेदगदिगयतिसंहगया
रक्षन्यमादय काक्षहेय
तिकीवलेंय जगमाविघा
षणाकक्षवं ॥ थनकंक
यावकं ॥ खाननकन ॥ क
गुवूपूजा ॥ कमायन ॥ वि
गर्जनयादाव ॥ मूत्रेनका
नखाखूलासवावकन
कांय ॥ थतिउल्लूखूवि
धि ॥ [illegible] ॥ गुह ॥ ० ॥

वाकसमधेवि
नखुवाभ
पूवेमधेवू
खवनूवह
हवोशु
मथगन
वयमाथिवा
ह्यावावकं
रहयाज

यवनुका मांगा
सायवबा हामक्ष
मांखवनू पीस्त्रींवा
नीयामू
समायू

ॐनमःश्रीवज्रसत्त्वाय ॥ ॥
उत्तरबलिपूजामाह ॥ ॥
पूर्वस्यांदिशि गुरुमण्डलदक्षि
णीभूतस्थाने ॥ उत्तरबलीपूजा
मुद्रा ॥ ॐ ॥ ॐउत्तरावज्रशास्त्रि
धर्मा × ॥ उत्तरबलावज्रशास्त्रीश्व
र्यकरु ॥ याज्ञादि पूर्वोक्तवत् ॥
ॐउत्तरबलायस्वाहा । ॐनिधन्हे
लवायस्वाहा । ॐकुरुकुरुहबलि
यस्वाहा । ॐमहाबलाकर्षणीय
स्वाहा । ॐमहाबलाकर्षणीय
स्वाहा ॥ ॐमूलापूजनियस्वाहा ॥ ॐ
पूजनियस्वाहा ॥ ॐहुडुकाली
यस्वाहा ॥ ॐमहाकालीयस्वाहा ॥ ॐउत्तरबला
स्वाहा ॥ पंचोपचारपूजा
मुद्रा ॥ धनकुरुमहाकुरु
धालं नानाविधबलिभो
क्तिक्तिप्रियसंपूर्णकुरु उत्त

बलायनमोस्तुते ॥ बलि ॥ ॐ
ॐकुरुकुरुबलालिमहाबला
लीमहाकर्षणीयसर्व
विघ्नसमयहृदयाविकर्ती
जिवासुवायूकुसिमहा
पूकुसिकुरुकुरुसिद्धिकर्षे
यहजःहूंवंहोःहुडुका
लीमहाकालीमहाबलकुरुहसम
यमिष्ठःजसौंजौंहूंमहा
समयबलिंगृहीतहूंहूंह
ूंस्वाहा ॥ दशबलिविय ॥
समयमाङ्कुशंवाहामम
धरेधूंहमकविय ॥ धन
कुबेरबलिपूजायाय ॥ किंग
निहाथपूजा ॥ दक्षधाविय ॥
कौबेरबलायाय ॥ धनकुंभ
धनकाकलायक ॥ जजमा
न ॥ सूवाकूमाधागवय ॥
सूनकावानिसीस्वकाकाः

वियं ॥ यूँ ह्रीं ॐ दिव्यवज्रे ॥
सर्वनयक ॥ सर्वाकर्षणि यु कि
स्वा ॥ स्वाहा ॥ सरस्वत्यै नमः ॥
राजा दक्षयजमान दक्षायणि
दक्षवलि ग्रानिकायै स्वि कायवश
न्यादिवशि का कामयायश्चिरु
द्रामयु क्लीं कानयकु ग्रधिक
मदा ॥ स्वाहा सं सास्त्राज ॥ यक्षविस
र्जनं ॥ जजमानाधिपकाधीवी
यकोमालीयूजा ॥ छायलिदा
वनदावबन्धनादिमादनिसर्ग
धसस्यानकाय ॥ समयकाय ॥
शङ्खकलीकानि ॥ ॥ ॐ
निग्रहयुनिस्तविधिसिद्धि
॥ ✱ ॥ ह्सौं नमश्चीवजसत्वाये ॥ ✱
दवासनासवेरुजगत्रिक्षो भकास
वस्तोश्कटपूरनाथ । गन्धद्वेयक्षा
ग्रकुजकयंधेयक्षविरूपोनिव
सन्निदत्वाश ॥ ॥ नमः कजानुश्पृ
थिवीकलर्द्रकमाऊरुलिविरूप

यामिमासु । सर्वजनोवेशसरुरुध्यसी
घ ऊत्वाऊ ह्रीं याजुसनयत्रस्तथा ॥ ॥
यमनयक्षनिवसन्तिरूपाश्चयनन्द
नयवरुवानयम् । यथादयारुन
विमणिवेष नवकषुसवेषवयव
सन्ति ॥ ॥ सन्तिलसत्रोजुवसेनमम्
वनालयायाधिकमोघिवासा । वापि
मदाणिषुवयत्लवषु कूयषुवयष्
वनिजनष ॥ ॥ यज्ञोमधाग्रयुयक्ष
नष सुनासयदवरुषुयव ।
वीरुत्रयेयावसथाग्रमम् मित्थम्
यानाणुवकऊरुवार्ता ॥ ॥ रुमाग्र
यन्तिजगृहावसन्ति त्रथासुविधि
सुवत्सवष । यक्षकवृक्षमहा
यत्थम् महाग्मोन्धानष ॥ ॥ सिंहव
रुक्षायुनिकासुयत्र वसन्तिवायास
महारुवीष । द्वीपषुदीयषुकालजा
त्र मनोग्रथानुष वसन्तियत्र ॥ ॥
रुक्षायुसन्तासनेशमार्त्यो ग्रपिवन्ति
दीयविधिश्रुरुक्षो । एकलुरुजन्

यंकूलि ॥ ॐ ह्रीं स्फूं ह्रीं ॥ यमका
मात्रीयका ॥ ॐ यमनदकं ॥ नेमृत्य
वेमूवीयाकूलि ॥ ॐ यक्षदवी ॥ व
रूणवायात्रियाका ॥ ॐ ह्रूं मभव
रूना ॥ वायूवा ह्रूंह्रीं यंकूलि ॥ ॐ
गववायू ॥ कूवरवामक्षायका ॥ ॐ
कूलिदंग ॥ ह्रीं धनमसालक्कीवे
कूलि ॥ ॐ कमीधानं ॥ कूमात्रियिकू
त्रिसूग ॥ ॐ यदक्रन्द ॥ गधयाकूलि
स्वग ॥ ॐ मनाभ ॥ यागिनीयंकूलि
स्वग ॥ ॐ वसुध्यम ॥ कुगवीकूलि
स्वग ॥ ॐ यथंपाथि ॥ यागालक्ष
लि ॥ ॐ ह्रूं मम्मवरूंघ ॥ मक्षमयु
लगल ॥ ॐ या जायकन ॥ स्वग्नद
मद ॥ ॐ या वापृथिवी ॥ धनलिंग
लिङ्गयायाक ॥ ॐ घर्मघगयावा
न ॥ वक्षाध्यक्षदिग ॥ ॐ यात्रे
दिगेस्वाला ॥ धक्षमाकूलिनिविंश
ऽः ॥ लक्कीयागंयथमाकिंमूकूलि

शिवथसिमा ॥ गमीधानं ॥ नक्कगम
सि ॥ ॐ ह्रूंविनाशजसा ॥ यागका
लि ॥ ॐ यालंयालंग ॥ नागशत्रास्वि ॥
ॐ ह्रूंखवा ॥ रुद्रुकादिधम ॥ ॐ
नमावरुधाय ॥ मूसिंगमादिमर
वासि ॥ ॐ नमस्कवृद्ध ॥ शिवद्रावा ॥
ॐ शिवारुद्धा ॥ शंकिंमूगधी ॥ ॐ
ह्रीनामदात्रा ॥ यागिनीरुथू ॥ ॐ
दवंवीयंमनामरु ॥ शिवंशंकिंकं
वंथि ॥ ॐ दृधानी ॥ वायूलासा ॥ ॐ
गववायू ॥ यक्षरू ॥ ॐ मूत्रेमू
द्धा ॥ यक्षधीकाल ॥ ॐ ह्रुंलोंयद्धा ॥
यक्षादिगधलाक ॥ ॐ वृंकंकघृ ॥
धर्ममानवा ॥ ॐ वृंकनयीका ॥ मू
धर्ममाल ॥ ॐ वृंदयक्षकंदिवसि ॥
वनूवजलधनू ॥ ॐ वंवंघशाकं
रुनी ॥ निर्मोलयवंधवा ॥ ॐ मू
द्धंकर्मे ॥ ह्रूंचंत्रंक्षायधीवित्ताद्ध ॥
ॐ ग्रागात्रमिंत्रं ॥ मूंनिमालंवंती

रुद्रकाय ॥ क्षांसरवाया ॥ ॐ क्ष्मिम्मे
ह्रा ॥ पंचवक्त्रका ॥ ॐ खेंजदिसूदा
॥ क्षांसिरुकवाचकायाजे ॥ ॐ व
क्षादनी ॥ लोमस्थ ॥ ॐ मानक्षाका
नकायुका ॥ ॐ क्ष्मांवज्राय ॥ चक
सिंध्रजजम क्षरुवाचस्थानग ॥ थ
क्षत्रावयूजा ॥ थसिमानिनालह्राव
यंमिमाल ॥ क्षलदावस्किलेखाव
॥ क्षयादवयाव क्षाङ्किविय ॥
ब्रह्माधीऊर्ध्व ॥ ॐ ब्रह्मयस्थानी ॥
मादृध्वनीमयहार्दु ॥ ॐ शिवानामा
सि ॥ क्षामानीलवदा ॥ ॐ यज्ञवा
ह्या ॥ वैष्णविल्वदामा ॥ ॐ विश्वव
राढ ॥ वानादिलूसि ॥ ॐ यस्यदूर्भी
॥ क्षंकिवालाक्षीवेद ॥ क्ष्रूंद्राग्निउ
क्षगव ॥ ॐ क्ष्रूंद्रदवी ॥ वामूद्रास्व
रधया ॥ ॐ जागवदस ॥ मदालक्ष्मी
लक्षधरया ॥ ॐ दिलक्षवधूं ॥ शि
वशक्तिरवाया ॥ ॐ सिवानामोशि ॥

रुलवरुलवीरवाक्षट ॥ ॐ क्ष्मूसिख्या
ता ॥ रुलवखवल ॥ ॐ क्ष्मूंघवाव ॥ श्री
लक्ष्मीरवसि ॥ क्ष्मूंयंय ॥ ॐ श्रीं स्वक ॥
श्रीकंठरवटव्वा ॥ ॐ नीलग्रीवात्रिशिक
क्षा ॥ रुगवलिधरिव ॥ ॐ क्ष्मूंक्ष्मूंखिक ॥
पंचवक्त्रकदा ॥ त्रिशूल ॥ ॐ संघाजा
ता ॥ चन्द्रक्षूंखीजवरवलय ॥ ॐ चन्द्र
मामनसाजात ॥ गंगादिगुणनिपरि
वार ॥ ॐ क्ष्रूंमंगंगे ॥ कूमारखडग्य
त ॥ ॐ यदक्रन्द ॥ क्ष्रूंनायकीव ॥ ॐ न
खत्यागघ [illegible] रवट्टागा ॥ ॐ नमा
कुसर्यखा [illegible] रुगवलिकावागा ॥ ॐ स
मरक्षदवा ॥ सर्पक्षत्रियाहान ॥ ॐ क्ष्मूं
फमूमय ॥ ब्रह्माविष्णुमहेश्वरशिवा
खवज्रात्मा ॥ ॐ क्ष्मांब्रह्मन ॥ पंचवक्त्र
पंचमात्र ॥ ॐ क्ष्मूंहिलाक्षूत्र ॥ वकी ग
यागिनीक्षाखवलाक्षात्र ॥ ॐ घीमात्र ॥
ब्रह्माजवदवक्त्र ॥ ॐ ब्रह्मयस्थानी ॥
विष्णुरवदवक्त्र ॥ ॐ क्ष्रूंद्रविष्णू

नकं घरूगवलिपात्रकं दिया
वसकलहिनैवास्त्रावव
लिसकयावद्वावकरश्चाय ॥
ग्रमाद्दधुघर्मस्यक्लानगवाच्च
वधुक्तंधरूमिसद्वसोच्चा
रूयत्रलयानविधेकरव ॥ त
थकधूनदाव ॥ ग्रहगव्यप्रो
क्षनं ॥ पंचगव्यजिहाग ॥ ऊऊ
मानयार्गविय ॥ त्रियूक्षा ॥ य
थाविधानन्नाग्निकार्यंकरवा
करद्यादेनं ॥ घृतारूमिं ॥ मि
लाक्तियूस्लेनकरवा ॥ ६
नमायथाकर्मिसमयंयथाकर्मि
कालय ॥ स्विष्टकृताय ॥ क्रव
रूयावक्षालसक्षसकनरूयाव
निर्मीक्षनं ॥ मतरूगावद्वासगु
धयंयेनरूक्षीलादाव ॥ क्षरूकन
सस्नानयाथ ॥ पंचामृत ॥ पंच

गव्यनसस्नानयाय ॥ थपंच
गव्यनसकृनैलाय ॥ ग्रव
ग्रक्षथायनिलाय ॥ पंचरूनन
वस्थनयाय ॥ दवदग्रक्रियार्थं
दग्रक्रियायाय ॥ साधनत्याय ॥
शिवत्व पंचरूत्व ॥ षउमूनं ॥
न्यासनसाधनं ॥ ॥ षट्सिय
जायावक ॥ लाय ॥ ॐ गवलि
वियक ॥ गंगद्वत्वक्रारूनिनि
वक्रारूनिनिरूयक ॥ द्वासगंधं
कारूवद्वक्रियारूसगायपंच
रूत्रकाव्रकायकारूकरूरू
ऽस्थानरूयामार्ज्जनं क्षास्यऽ
रूयायूवकायाऽसयाऽवयावद्
रूसिरूकवारवाय ॥ नकिलिका
यवसियूजाय ॥ ग्रनानलद्वनं
लाय ॥ ऽंदवस्यलो ॥ पंचगव्यन
लाय ॥ ऽंयविद्रक्षो ॥ नकिलिंगा
य ॥ ऽंनमरूनद्र ॥ ऽरू ॥ ऽंय